

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2017 और जनवरी 2018 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.एफ.-101
हिंदी में आधार पाठ्यक्रम



मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

हिंदी में आधार पाठ्यक्रम सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.एफ.-101 / 2017-18

प्रिय छात्र/छात्राओ,

जैसा कि हमने 'कार्यक्रम दर्शिका' में बताया है कि हिंदी के आधार पाठ्यक्रम बी.एच.डी.एफ.-101 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1 से 4 पर आधारित हैं।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा के विभिन्न कौशलों का विकास करना है। यह कौशल है : सुनकर समझना, पढ़ना, बोलना और लिखना। इसके लिए भाषा के आधारभूत तत्वों पर अधिकार प्राप्त करना होता है। भाषा सीखने का उद्देश्य यह भी है कि हम उसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान कर सकें, विविध विषयों को पढ़कर उन्हें समझ सकें और अपने शब्दों में उन्हें व्यक्त कर सकें तथा साहित्य पढ़कर उसका रसास्वादन ले सकें।

सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको हिन्दी भाषा के व्यावहारिक उपयोग में कितनी दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य का संबंध खंड 1 से 4 तक है। इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य भाषा के आधारभूत तत्वों पर आपकी लेखन क्षमता जाँचना है। कुछ प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त रूप में देने हैं।
2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। एक प्रश्न दिये गये अवतरणों के भाव पक्ष की व्याख्या पर आधारित है। एक अन्य प्रश्न में आपको निबंध लिखना है। सत्रीय कार्य में व्याकरण संबंधी कई तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। एक प्रश्न पत्र-लेखन लिखने के बारे में है। एक प्रश्न-भाव पल्लवन या संक्षेपण के बारे में हैं। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी साहित्य संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप हिन्दी भाषा के अपने प्रयोग में भी सुधार ला सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। संदर्भ और व्याख्या वाले प्रश्न में यह अवश्य जाँच लें कि संदर्भ में कही बातें दिये गये अंश के अनुरूप हैं। व्याख्या में भी क्रमबद्धता, तार्किकता और स्पष्टता होनी चाहिए। व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले अपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पायेंगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

- ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
- ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
- घ) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
- ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
- 3 **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य
(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.एफ-101
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.एफ-101/टीएमए/2017-18
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए : 10
(क) लाल-पीला होना
(ख) नौ दो ग्यारह होना
(ग) कान का कच्चा होना
(घ) पेट में चूहे दौड़ना
(ङ) आँखें दिखाना
2. निम्नलिखित शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द बनाइए : 5
(क) धन् + अभाव
(ख) दुः + भाव
(ग) सूर्य + उदय
(घ) वाक् + ईश
(ङ) जगत् + नाथ
3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो समानार्थी शब्द बताइए : 5
(क) कमल
(ख) रात
(ग) सूर्य
(घ) गणेश
(ङ) नरेश
4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए : 5
(क) असुर
(ख) सापेक्ष
(ग) समानता
(घ) उन्नति
(ङ) विरोध
5. निम्नलिखित शब्दों के संधिविच्छेद कीजिए : 5
(क) जितेंद्र
(ख) गजानन
(ग) राजतंत्र
(घ) निराशा
(ङ) उन्नयन
6. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए : 5
(क) आगमन
(ख) असफल
(ग) सुशासन
(घ) विवाद
(ङ) असंभव
7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर अर्थ की भिन्नता बताइए : 5
(क) मानव
(ख) समाज
(ग) बंधु

- (घ) भाषा
(ङ) उपनिवेश
8. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250–300 शब्दों में लिखिए : 5X2=10
(क) 'पूस की रात' कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखिए।
(ख) तुलसीदास की कृति रामचरितमानस में वर्णित मार्मिक प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।
9. निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए : 5X2=10
क) वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु मालिका अट्टालिका, प्राकार।
ख) चरन कमल बंदौ हरी राई
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई।।
बहिरौ सुने गूँग पुनि बोले रंक चले सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनामय बार-बार बंदौ तिहि पाई।।
10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 300 शब्दों में निबंध लिखिए : 10
(क) शहरों में बढ़ता प्रदूषण
(ख) हिंदी धारावाहिकों में स्त्री की छवि
(ग) महात्मा गांधी
11. कंप्यूटर खरीदने के लिए अपनी माँ को पत्र लिखें। इस पत्र में कम्प्यूटर खरीदने की आवश्यकता को रेखांकित करें। 10
12. 'आतंकवाद के बढ़ते' चरण विषय पर 200 शब्दों में एक दैनिक समाचार पत्र के लिए संपादकीय लिखिए। 10
13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके आधार पर नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2X5=10
स्थापत्य कला की तरह मूर्ति कला का आरंभ भी भारत में हड़प्पा सभ्यता से माना जा सकता है। स्थापत्य और मूर्ति दोनों कलाओं में हड़प्पा के बाद के अवशेष प्रायः मौर्यकाल (325–188 ई.पू.) या उससे कुछ पहले के मिलते हैं। मूर्तिकला में भी समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं और नयी-नयी शैलियाँ अस्तित्व में आती रही हैं। मौर्यकाल की मूर्तिकला में यथार्थता और आकर्षक सौंदर्य अभूतपूर्व है। अशोक कालीन मूर्तिकला इसी युग की है। मौर्यकाल के बाद शुंग (150-73 ई.पू.) और शक-कुषाण काल (ई.पू. पहली सदी– 300 ई. तक) में मूर्तिकला का विकास हुआ। शुंगकला उतनी यथार्थपरक नहीं है। इन दोनों कालों में पत्थर और मिट्टी दोनों का उपयोग हुआ। कुषाणकाल की मथुरा में पाई गई यक्षिणियों की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिनमें सामाजिक जीवन के आनंद और उल्लास को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

बुद्ध की समाधिस्थ मूर्तियाँ मूर्तिकला की अमूल्य संपदा हैं। गंधार प्रदेश (अफ़गानिस्तान) में ग्रीक कलाकारों ने अपनी शैली से जिन भारतीय विषयों, अभिप्रायों, प्रतीकों का कलात्मक रूपायन किया, उन्हें गंधार शैली

के नाम से जाना जाता है। कुषाणकाल में ही इस शैली का विकास हुआ था। इस शैली की सभी मूर्तियाँ सिर्फ बौद्ध स्थलों से उपलब्ध हुई हैं। बुद्ध मूर्तियाँ गुप्तकाल (275-500 ई.) में भी निर्मित हुईं। इनमें सारनाथ की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बैठी बुद्ध मूर्ति शिल्पकला एवं सौंदर्य प्रभाव में अद्वितीय है। वस्तुतः मूर्तिकला के विकास में बौद्ध धर्म का योगदान उल्लेखनीय है।

हिंदू धर्म में मूर्ति पूजा वैष्णव भक्ति का मुख्य आधार रही है। ईश्वर के साकार रूप की आराधना के लिए मूर्ति को ही ईश्वर मानकर उसकी पूजा-अर्चना वैष्णव भक्ति का मुख्य अंग है। ईश्वर के विभिन्न अवतारों तथा अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण काफी लंबे समय से होता रहा है। दूसरी-तीसरी शताब्दी के बाद से हिंदू धर्म के पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ मिलने लगती हैं। शिव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी आदि की मूर्तियाँ इस दृष्टि से दर्शनीय हैं।

1. भारत में मूर्तिकला का आरंभ कब से माना जाता है।
2. मौर्य काल और कुषाण काल की मूर्ति कला का अंतर बताइए।
3. गंधार शैली की विशेषताएँ बताइए।
4. बुद्ध की मूर्तियों के निर्माण में किन-किन शैलियों का इस्तेमाल हुआ?
5. भारतीय मूर्तिकला के विकास में हिंदू धर्म के योगदान का उल्लेख कीजिए।